Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 9, Print Issue 2 - 2024, Pg. No. 7-10
Peer Reviewed Journal

Research Article

श्रीरामचरितमानस में व्याप्तलोक मंगल की भावना

Uma Shrivas[1], Sahid Hussain[2]

[1]Student, Department of Hindi, Dr C V Raman University Kota Bilaspur, Chhattisgarh, India.
[2]Assistant Professor, Department of Hindi, Dr CV Raman University Kota Bilaspur, Chhattisgarh, India.

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202402

I N F O

E-mail Id:
umashriwas5@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid-org/0009-0001-8004-9597

Date of Submission: 2024-07-01
Date of Acceptance: 2024-08-03

सारांश

जड़ चेतन जग ण्जीव जत, सकल राममय जानि।
बंदउँ सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि ।।[1] (बालका.ड/ दोहा 7 ग)
देव, दनुज, नर, नाग, खग, प्रेत, पितर, गंधर्व।
बंदउँ किन्नर रजनिचर, कृपा करहुँ अब सर्ब।।[2] (बालका.ड/ दोहा 7 घ)
आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ वास4ी।
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।[3] (बालका.ड/ दोहा 8/ चौपाई 1,2)

राम चरित मानस तुलसी साहित्य का महाकाव्य है। इसे कलियगीन सामवेद भी कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लोक मंगल की कामना को सर्वोपरि रखा। लोक मंगल अर्थात जन सामान्य से जन विशेष तक। मंगल का अभिप्राय है शुभ हित चिंतन। तुलसीदास जी कहते हैं कि इस प्रकृति की संरचना में जड़–चेतन, स्थावर–जंगम सभी का कल्याण हो क्योंकि सभी में परमात्मा का अंश है। इसीलि, तुलसीदास जी चेतन की सभी योनियों, देव, दानव, मनुष्य, सर्प, पक्षी, प्रेत, पितर, गंधर्व, किन्नर एवं राक्षस सभी से प्रार्थना करते हैं कि उनकी इस मंगल–कामना में सभी उनकी सहायता करें। वे इस सृष्टि के जल–थल, एवं गनचारी चार लाख चौरासी योनियों में समाहित प्राणियों का कल्याण चाहते हैं। गोस्वामी जी की समत्व दृष्टि में सभी उनके ईष्ट के प्यारे हैं उन सभी की वे वन्दना करते हैं।

शब्दकुञ्जी : लोकमंगल, जगतकल्याण, समत्व, सद्भावना, अपनत्व, आदर्शसमाज।

प्रस्तावना

लोक मंगल में प्राणी मात्र के लिए कल्याण की भावना निहित है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने मानव में अपने परम आराध्य श्री राम जन्म के हेतु को त्रिकालदर्शी कुल पुरोहित गुरू वसिष्ठ के श्री मुख से भाषित किये–

सत्य संध पालक श्रुति सेतु। राम जनमु जग मंगल हेतु।।[4]
(अयोध्याका.ड/ दोहा 254/चौपाई 3)

अर्थात् श्रीरामजी का अवतरण केवल अयोध्या के कल्याण के लिए नहीं अपितु विश्व के मंगल हेतु हुआ है।

तुलसी दास जी के इस लोक मंगल भावना से ओतप्रोत होने के कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं– ''हिंदी कवियों में इस प्रकार सर्वांगपुर्ण भावुकता हमारे गोस्वामी जी में है जिसके प्रभाव से रामचरितमानस उत्तरी भारत की सारी जनता के गले का हार हो रहा है।''[5]

राम चरित मानस गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचन्द्र जी का चरित्र–चित्रण करने वाली अप्रतिम और अद्वितीय महाकाव्य है। इस महाकाव्य की रचना अवधी भाषा में की गई है ताकि सभी के लिए यह सुलभ हो सके। वास्तव में तुलसी और उनका साहित्य भारतीय जीवन शैली की आधार शिला है। मानस को लोक चेतना से परि

Copyright (c) 2024: Author(s). Published by Advanced Research Publications

पूर्ण भारतीय समाज की संजीवनी और आचार संहिता माना जाता है। मानस लोक मंगल स्थापना के लिए महौषधि है।

मानस में व्याप्त लोकमंगल की भावना–

तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से कोई भी रचनाकार, साहित्यकार, कलाकार, कवि, कोविद, विचारक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। गोस्वामी तुलसीदास भी इस सम–सामयिक सामाजिक विश्रृंखलता से प्रभावित हुए। तत्कालीन समाज आदर्श रहित, मर्यादा विहीन, पथभ्रष्ट और हीन भावनाओं से ग्रसित था। मुगलों का साम्राज्य था। हिंदुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार हो रहे थे। दबाव से धर्म परिवर्तन का सिल सिला जारी था। आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक शोषण होने से जनता त्राहि–त्राहि कर चित्कार रही थी। नारी को भोग विलास की वस्तु मात्र समझा जाता था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस युग का चित्रण अपनी रचना कविता वली के उत्तरकाण्ड में किया है।

वे इस घोर दुर्दशा को सुधारने के लिए ही लोक–कल्याण हेतु प्रयत्न शील हुए। मानस के माध्यम से रामराज्य की स्थापना कर सुंदर समाज की परिकल्पना की। समाज में आमूलचूल परिवर्तन कर आदर्श स्थापना का प्रयास किए।

''बयरू न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विशमता खोई।।[6]

(उत्तरकाण्ड/दोहा 20 चौपाई 7)

राम भगति रत सब नर नारी। सकल परम गति के अधिकारी।।[7]

(उत्तरकाण्ड/दोहा 21 चौपाई 4)

श्रीराम क्षत्रिय वंश में अवतरित परम शक्तिशाली, अतुलनीय सहन शील और दिव्य सौंदर्य से सुशोभित व्यक्तित्व थे। पंचवीरता से परिपूर्ण तुलसी के राम राज भवन में प्रकट तो हुए परंतु सुकुमार अवस्था में ही रामत्व को सिध्द करने हेतु महामुनि विश्वामित्र के साथ उनके यज्ञ रक्षार्थ काननचारी होगए। वन में यज्ञ विध्वंशकारी राक्षसों का संहार कर विधिवत यज्ञ सम्पन्न कराए, जिससे विश्वामित्र प्रसन्न होगए। गोस्वामी तुलसीदास विश्वा मित्र के संबंध में लिखते हैं–

तब ऋषि निज नाथहिं जिय चीन्ही। विद्यानिधि कहुँ विद्या दीन्हीं।।

जाते लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तनु तेज प्रकासा।।[8]
(बालकाण्ड/दोहा 209 चौपाई 7,8)

इस प्रकार महर्षि विश्वामित्र के सानिध्य में बला–अतिबला विद्या अर्जित किए और महर्षि ने अपने जीवन भर की संचित विद्याएं एवं आयुधों को समर्पित कर राम–लखन को परम शक्ति सम्पन्न, अतुलित बल विद्या से निपुण कर परम् श्रेष्ठता प्रदान किए।

श्रीराम के व्यक्तित्व विकास, त्याग, भातृत्वप्रेम, वचनबध्दता का समन्वित रूप तब देखने को मिलता है जब उन्हें राज्य का उत्तराधिकारी बनाने की सूचना दे कर दूसरे दिन सुबह तपस्वी के वेष में अरण्यचारी जीवन जीने का आदेश दिया जाता हैं। इस विपरीत परिस्थिति में भी राम बड़े सहज ढंग से अपनी जननी को कहते हैं–

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ का. जू।।[9] **(अयोध्याकाण्ड/दोहा 53 चौपाई 6)**

साथ ही साथ अपनी मंझली मां कैकेयी को संतोष देते हुए कहते हैं–

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू। विधि सब विधि मोहि सन्मुख आजू।।[10] **(अयोध्याकाण्ड/दोहा 42 चौपाई 1)**

उपरोक्त पंक्तियों से राम के आदर्श व्यक्तित्व स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल चित्रकूट में राम–भरत के मिलाप पर लिखते हैं कि–''वहाँ शील से शील का, स्नेह से स्नेह का और नीति से नीति का मिलन है। भ्रातृत्व प्रेम व भगति से भरे भरत का चरित्र अनुभव गम्य है। इन बातों में सदैव सकारात्मक सोच, पारिवारिक, कता, सामाजिक–सामंजस्यता, राजनीतिक–स्थिरता, कर्तव्यपरायणता एवं विश्वशांति सुव्यवस्था के अद्भुत समन्वय परिलक्षित होते हैं।''[11]

श्रीराम वनवासियों को गले लगाकर उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाते हैं। मानवता का पाठ पढ़ाते हैं। निषादराज को सखा बनाते हैं। शबरी भीलनी के जूठे बेर खाकर प्रेम प्रधान समाज का निर्माण कर छुआ छूत का अंत करते हैं। मांसाहारी पक्षी जटायु में पितृत्व भाव लुटाते हैं। ऋषि–मुनियों के सानिध्य में जीवन यापन कर ब्रह्मवेत्ता, तत्वदर्शी, ईश्वरीय चिंतन की साधना कर अपरिमित महिमा से मंडित होते हैं। दिव्य अस्त्र–शस्त्र एवं गोपनीय विद्या हासिल कर उन्हें राक्षसों से निजात दिलाने की प्रतिज्ञा करते हैं।

यथा–

निसिचर हीन करउँ मही, भुज उठाइ पन कीन्ह।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि, जाइ जाइ सुख दीन्ह।।[12]

(अरण्यकाण्ड/दोहा 9)

इस तरह से सबके हितार्थ उन्होंने कार्य किया।

श्रीराम अरण्यवासी बनकर प्रकृति के सौंदर्य को विकसित कर पर्यावरणीय संतुलन स्थापित करते हैं। परम् उच्छृंखल बानरों एवं भालुओं से तादात्म्य कायम कर उन्हें सहयोग करते हुए अपने सहायक के रूप में मैत्रीवत व्यवहार करते हैं। तुलसी के राम महर्षि वसिष्ठ के अनुसार ''प्राण–प्राण के, जीव–जीव के, सुख के सुख धाम'' हैं। अर्थात् जैसे प्राण के बिना शरीर मृतक है वैसे ही राम के बिना प्राण मृतक है। श्री राम समाज में व्याप्त ऊँच–नीच, जाति–पाँति, कुल, धर्म की संकीर्ण विचारों को तिरोहित करते हुए प्राणी मात्र में समानता का संचार करते हैं।

यथा–

जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा। लोक बेद सब भाँतिहिं नीचा।।[13]
(अयोध्याकाण्ड/दोहा 154 चौपाई 3)

राम वनवासियों की बातों को सहृदयता के साथ ठीक उसी प्रकार सुनते हैं। जैसे जननी–जनक अपने छोटे बच्चे की तोतली वाणी आनंदित होकर सुनते हैं। उनके भोले मन में प्रेम का संचार करते हैं। उनकी व्यथा को ,क स"ाक्त समाज सुधारक के रूप में दूर कर सुव्यवस्थित जीवन जीने का संदेश देते हैं।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202402

यथा–

बचन किरातन्ह के सुनत,जिमि पितु बालक बैन।[14]

(अयोध्याकाण्ड/दोहा 136)

श्रीराम नारियों में चेतना का संचार करते हैं व सम्मान देते हैं। राम शबरी प्रसंग में शबरी से कहते हैं–

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानहुँ एक भगति कर नाता।[15]
(अरण्यकाण्ड दोहा 35/चौपाई 4)

शबरी दीन भाव से स्वयं को निकृष्ट बताती है। श्रीराम उन्हें भामिनी अर्थात् मन को भाने वाली शब्द से संबोधित कर समाज में प्रेम की उच्चता के आर्दश को स्थापित करते हैं। नारी त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति है। इसके बावजूद नारियों में विनयशीलता के भाव को भली–भांति समझा।

दूसरे प्रसंग में राजा बाली की भार्या तारा को आत्मज्ञान का बोध कराते हैं–

तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ज्ञान हर लीन्हीं माया।[16]

(किश्किन्धाकाण्ड/दोहा 11/चौपाई 3)

तीसरे प्रसंग में श्री राम समत्व भाव को प्रदर्शित करते हुए मंदोदरी में मानसिक शक्ति का संचार करते हैं। जब राम ने मंदोदरी के पति रावण को मारा तब वे राम के दर्शन के लिए आती हैं।

यथा–

भरि लोचन रघुपतिहि निहारी। प्रेम मगन सब भए सुखारी।[17]
(लंकाकाण्ड/दोहा 125/चौपाई 3)

चौथे प्रसंग में मंझली माँ कैकेयी जो स्वयं के कृत्य से ग्लानि से विगलित हो रही थी। राम वनवास से वापस होते ही सर्वप्रथम उनके समक्ष उपस्थित होते हैं–

प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गये भवानी।।[18]
(उत्तरकांड/दोहा 10/चौपाई1)

इस प्रकार उन्हें हर तरह से समझाकर संतुष्ट करते हैं। सच है व्यक्ति दूसरे के नजर से गिरकर जीवित रह सकता है परंतु स्वयं के नजर से गिरकर नहीं। श्रीराम नारियों को सम्मान पूर्वक प्रतिष्ठित करते हैं। अहल्या, सुनयना, ताड़का, कैकई, अनुसुईया, तारा, स्वयंप्रभा, मंदोदरी सभी को सम्मान देकर इस बात का संदेश देते हैं–'अत्र नारियस्य पूज्यन्ते, रमन्ते त्र देवता।'

श्रीराम लंका विजय हेतु शक्ति की भी पूजा करते हैं। इस तरह नारी समाज में भोग की वस्तु नहीं अपितु वंदनीय हैं। इस बात को राम ने समाज में प्रतिष्ठित किया। नारियों के प्रति जो भावना राम के हृदय में थी उसे स्वयं रावण ने कुम्भकर्ण से कहा कि सीता को अपनाने के लिए जब मैं राम का नकली वेष बनाया तो संसार की हर स्त्री मुझे माता तुल्य लगने लगी। यह प्रमाण है इस बात का कि राम के प्रतिरूप में भी आदर व सम्मान की भावना जागृत हो जाती है।

श्रीरामचरितमानस में लोक मंगल की स्थापना मानव मात्र तक ही सीमित नहीं है अपितु पशु–पक्षियों के साथ इस प्रकार प्रेम का साम्राज्य स्थापित किया गया था कि वनवासी राम, सीता और लक्ष्मण के व्यवहार से आश्रम तक ही क्या पूरे अरण्य क्षेत्र में निर्भय होकर पशु–पक्षी विचरण करते थे। जब रावण क्षरा सीता जी का हरण हुआ तो राम का यहाँ के पेड़–पौधे, पक्षु–पक्षियों के प्रति प्रेम साफ–साफ झलकता है। वे पूछते हैं–

हे खग, मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।।

खंजन सूक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रवीना।।[19]
(अरण्यकाण्ड/दोहा 30/चौपाई 10)

यहाँ विरही राम के साथ–साथ पूरा अरण्य क्षेत्र पशु–पक्षी, लता–गुल्म सभी सीता वियोग में डूब जाते हैं। इस प्रकार लोकमंगल की भावना प्रकृति के जर्रे–जर्रे में दिखाई देती है।

मानस में तुलसी के राम की लोकमंगल की कामना का क्षेत्र इतना व्यापक है कि दुश्मन भी राम की प्रशंसा करते नहीं थकते।

यथा–

बैरिउ राम बड़ाई करहीं। बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं।।[20]
(अयोध्याकाण्ड/दोहा 200/चौपाई 7)

राजा दशरथ, कैकई से कहते हैं–

जासु सुभाव अरिहि अनुकूला। सो किमि करिहिं मातु प्रतिकूला।।[21]
(अयोध्याकाण्ड/दोहा 32/चौपाई 8)

इस समत्व भाव का प्रत्यक्ष प्रमाण लंकाकाण्ड में देखने को मिलता है, जब राम लंका पर आक्रम.ा के पूर्व सुबेल पर्वत पर स्थित अपने दल से बाली पुत्र अंगद को इन अनुकरणीय संदेश के साथ रावण के पास भेजते हैं।

बालि तनय बुधि बल गुन धामा। लंका जाहु तात मम कामा।।

बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ। परम चतुर मैं जानत अहऊँ।।

काज हमार तासु हित होई। रिपु सन करेहु बतकहिं सोई।।[22]
(लंकाकाण्ड/दोहा 17/चौपाई 6,7,8)

राम कहते हैं– हे अंगद ! ऐसा उपाय करो जिससे हमारा कार्य (सीता की वापसी) हो जाए और रावण का हित संवर्धन हो। इस संदेश के माध्यम से तुलसी अपने महानायक राम की असीम उदारता का परिचय देते हैं। तुलसी के राम विश्व के एकमात्र ऐसे नायक हैं जो शत्रु की भी मंगल कामना करते हैं। विश्व के साहित्य में अन्यत्र ऐसा देखने को नहीं मिलता। यही लोकमंगल की पराकाष्ठा है।

राष्ट्रधर्म सर्वोपरि है। राष्ट्र की अखंडता को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए, पारिवारिक एकता, विश्वसनीयता, त्याग की उदात्त भावना अत्यंत आवश्यक है। तुलसी के महानायक राम इसके साक्षात स्वरूप हैं। तुलसी के राम विश्व शांति के अग्रदूत हैं। प्रजा तंत्र के परिपोषक हैं। वे साम्राज्यवादी नहीं समन्वयवादी हैं। परराष्ट्र में व्याप्त अन्याय, अत्याचार और शोषणवादी शक्ति को विनष्ट कर समग्र शांति का संचार करने के लिए संकल्पित हैं। राम ऋषि, मुनि, तपस्वी एवं

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202402

साधकों के जीवन में व्याप्त आतंक को समूल नाश कर चिर शान्ति स्थापित करते हैं। पम्पापुर का राज्य आतताई बाली से छीनकर सुग्रीव को सुपुर्द कर बाली पुत्र अंगद को युवराज पद पर विभूषित कर अमन–चैन बहाल करते हैं। त्रैलोक्य अत्याचारी रावण का वध कर नीति विभूषण विभीषण को लंका का अचल राज्य सौंपकर विश्व शांति का संदेश देते हैं कि साम्राज्य पर नहीं प्राणीमात्र के हृदय पर राज्य करना सर्वोत्तम है।

इस प्रकार तुलसीदास जी ने मानस में राम के चरित्र के माध्यम से ऊँच–नीच, छुआछूत, सुख–दुःख, लाभ–हानि, भाव–कुभाव आदि की विवेचना कर अपने लोकमंगल की भावना को सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। समाज में व्याप्त असमानताओं के लिए उन्होंने लिखा है कि दरिद्रता के समान कोई दुःख नहीं है। अहिंसा से बड़ा कोई धर्म नहीं है। पराई निंदा से बड़ा कोई पाप नहीं है।

उपसंहार–

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने महाकाव्य रामचरितमानस में सम्पूर्ण सृष्टि को राममय देखते हैं। राममय देखने का तात्पर्य समता का भाव है सारा संसार निज सदृश्य है। उनमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना परिलक्षित होती है। रामराज्य में साम, दाम, दंड, भेद (राजनीति के चरण) ये शिथिल हो गए थे।

यथा–

राम राज बैठे त्रिलोका। हरशित भए गए सब सोका।।[23]
(उत्तरकाण्ड/दोहा 20/चौपाई 7)

अल्प मृत्यु नहिं कवनेउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा।।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।।[24]
(उत्तरकांड/दोहा 21/चौपाई 5,6,7)

इस प्रकार सभी त्रय ताप–(दैहिक, दैविक, भौतिक) से मुक्त थे। प्रकृति अनुकूल थी। कृ"ि हेतु जल सहज सुलभ थे। अन्याय लेशमात्र भी नहीं था। समाज अमन चैन एवं शांति से परिपूर्ण थी। प्रजा समत्वभाव से आपस मे परस्पर प्रेम करते थे। राम के चत्रि, के माध्यम से तुलसी ने, सी ही सृष्टि की कल्पना की।

आज भारतीय संविधान में मूलाधिकार का उल्लेख कर लोकतंत्र में प्राण फूंका गया है। ये रामराज्य की परिकल्पना का प्रतिफल है। राम अपने प्रजा को यह कहकर अधिकार देते हैं–'जौ अनीति कछु भाखौं भाई तौ मोहि बरजेहु भय बिसराई।' इस कथन में अनीति के विरु) आवाज उठाने की क्षमता प्रदान की गई है। आज सबका साथ, सबका वि"वास,सबका विकास इस मंत्र के क्षरा लोकमंगल की कामना को चरितार्थ करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. तुलसीदास श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 07(ग) 07(द्य), पृ. 39
2. तुलसीदास श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 07(द्य), पृ. 39
3. तुलसीदास श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 08, चौपाई 1,2 पृ. 39
4. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 254, चौपाई 3, पृ. 364
5. दीपाली आस्था, 2021, काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि
6. उतुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 20, चौपाई 8, पृ. 599
7 तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरका.ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 21, चौपाई 4, पृ. 600
8. तुलसीदास रामचरितमानस, बालकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 209, चौपाई 7,8, पृ. 151
9. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 53, चौपाई 6, पृ. 262
10. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 42, चौपाई 01 पृ. 256
11. रामचन्द्र शुक्ल, गोस्वामी तुलसीदास संशोधित संस्करण, 1935, पृ. 88
12. तुलसीदास रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 09, पृ. 410
13. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 154 चौपाई 3, पृ. 334
14. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 136, पृ– 305
15. तुलसीदास रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 35, चौपाई 04 पृ. 432
16. तुलसीदास रामचरितमानस, किष्किंधाकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 11, चौपाई 3 पृ. 448
17. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 125, चौपाई 3 पृ. 567
18. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 10, चौपाई 1, पृ. 591
19. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 30, चौपाई 9,10 पृ. 428
20. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर,, दोहा क्रमांक 200, चौपाई पृ. 337
21. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्याका.ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 32, चौपाई 8 पृ. 252
22. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 17, चौपाई 6,7,8 पृ. 508
23. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 20, चौपाई 7, पृ. 599
24. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, मूलगुटका, गीताप्रेस, गोरखपुर, दोहा क्रमांक 21, चौपाई 5,6,7, पृ. 600

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202402